4

रघुवंश-रघुवंशीय राजाओं के गुणों का वर्णन

आप सभी ने महाकवि कालिदास का नाम सुना है। वे न केवल भारतवर्ष में अपितु सम्पूर्ण विश्व के प्रसिद्ध कवियों में अद्वितीय हैं। उन्होंने सात काव्य लिखे हैं। रघुवंशम् और कुमारसंभवम् ये दो महाकाव्य, मेघदूत और ऋतुसंहार ये दो खण्ड काव्य और अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीय एवं मालविकाग्निमित्रम्, ये तीन नाटक हैं। सभी कृतियों में रघुवंशम् प्रथम स्थान पर है। रघुवंश 19 सर्गात्मक एक लालित्यपूर्ण महाकाव्य है। इसमें रघुवंशीय राजाओं की कथा निबद्ध है। भगवान श्रीराम ही इस महाकाव्य के नायक है। 10वें सर्ग से लेकर 15वें सर्ग तक राम की कथा वर्णित है। यह महाकाव्य राजा अग्निवर्ण के राज्याभिषेक से समाप्त होता है। रघुवंश में जिन राजाओं का वर्णन किया गया है। उसका रामायण वर्णित राजाओं के वर्णन से भेद है। किन्तु वायुपुराण में वर्णित राजाओं के साथ समानता लिए है।

यहाँ हम रघुवंश के प्रथम सर्ग को पढ़ेंगे। इस सर्ग में कवि रघुवंशीय महाराज दिलीप का वर्णन करते है। उसके बाद सन्तान अभाव के कारण पत्नी सुदक्षिणा के साथ वशिष्ठ के आश्रम में जाते हैं। गुरु वशिष्ठ ने बताया कि कामधेनु की अवज्ञा ही सन्तान लाभ में बाधा है। अत: दोनों कामधेनु की पुत्री सुरभि की सेवा में तत्पर हो गये। यह पाठ का सार है।

इस पाठ में रघुवंशम् के शुरू के दस श्लोकों को पढ़ेंगे। यहाँ काव्य के विषयवस्तु का वर्णन शुरू नहीं होता है। इस भाग में सर्वप्रथम कवि महाकाव्य का मंगलाचरण करते हैं। उसके बाद ग्रन्थ लेखन में स्वयं का असमर्थ्य प्रकट करके विनय प्रदर्शन करते हैं। असामर्थ्य होते हुए भी रघुवंश लेखन में कैसे प्रवृत हुए यह भी प्रकट करते हैं। उसके बाद कालिदास साध ारणतया सभी रघुवंश के राजाओं का वर्णन करते हैं। अन्त में रघुवंश काव्य पढ़ने का अधि कारी कौन है, यह कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- कालिदास की विनम्रता को समझ पाने में;

टिप्पणी

- रघुवंश के राजाओं के विषय में जान पाने में;
- कालिदास की काव्य शैली को समझ पाने में;
- श्लोकों के अन्वय एवं प्रतिपद का अर्थ समझ पाने में;
- उपमा आदि अलंकारों को समझ पाने में और;
- दीर्घ पदों का विग्रह वाक्य और समास को जान पाने में।

4.1 मूलपाठ

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥1॥

क्व सूर्यप्रभवो वेशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥2॥

मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः॥3॥

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः॥4॥

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्॥5॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्॥6॥

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्॥7॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥8॥

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः॥9॥

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा॥10॥

4.2 मूलपाठ की व्याख्या

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥1॥

टिप्पणी

अन्वय- वागर्थाविव सम्पृक्तौ जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ वागर्थप्रतिपत्तये वन्दे।

अन्वयार्थ- वागर्थाविव शब्दार्थाविव सम्पृक्तौ सम्पर्कयुक्तौ जगतः विश्वस्य पितरै मातापितरौ पार्वतीपमेश्वरौ उमामहेश्वरौ वागर्थप्रतिपत्तये शब्दार्थपरिज्ञानाय वन्दे अभिववादये।

सरलार्थ- शब्द और अर्थ के समान नित्य संयुक्त समस्त लोक के माता पिता पार्वती परमेश्वर को शब्दार्थ राशि को ठीक प्रकार से ज्ञान के लिए प्रणाम करता हूँ।

तात्पर्यार्थ- यह रघुवंश का मंगल श्लोक हैं। प्रत्येक कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए कार्य के आरम्भ में मंगल अर्चना करते हैं। इस प्रकार कवि किसी काव्य के निर्विघ्न परिसमाप्ति के लिए काव्य के आदि में मंगलाचरण करते हैं।। इसलिए महाकवि कालिदास भी अपने रघुवंश महाकाव्य के मंगल को इस श्लोक द्वारा धारण करते हैं।। इस श्लोक में कवि पार्वती परमेश्वर की स्तुति द्वारा काव्य के मंगल को सम्पादित करते हैं।। यहाँ विद्यमान दोनों देव समस्त संसार के माता-पिता हैं।। अतः समग्र विश्व ही इनके पुत्र के समान हैं। जैसे माता-पिता का प्रसाद सदा सन्तान में रहता हैं। उसी प्रकार उमा-महेश्वर का प्रसाद भी पुत्र लक्षण से कवि पर है, ऐसा कह सकते हैं। यहाँ ''पार्वती परमेश्वरौ वागर्थौ इव सम्पृक्तौ'' यह उपमान दिया गया। सम्पृक्तौ पद का अर्थ सम्पर्क युक्त हैं। अर्थात् शब्द और अर्थ का सम्पर्क जैसे नित्य हैं, उसी प्रकार उमा-महेश्वर की वन्दना का फल शब्दार्थ का सुस्पष्ट ज्ञान हैं। शब्द और अर्थ उत्कृष्ट हो तो काव्य भी उत्कृष्ट होता हैं। काव्य की उत्कृष्टता ही कवि की सफलता हैं। अतः कवि पार्वती-परमेश्वर की स्तुति से रघुवंश काव्य की सफलता के लिए प्रार्थना करते हैं। अतः कवि की प्रार्थना समुचित हैं।

व्याकरण विमर्श

- वागर्थाविव - वाक् च अर्थः च वागर्थौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। वागर्थौ इव इति वागर्थाविव।
- सम्पृक्तौ - (सम्+पृच+क्त) सम् - इति उपसर्गपूर्वकात् पृच् - धतोः क्तप्रत्यये सम्पृक्त इति प्रातिपदिकं निष्पद्यते। तस्य प्रथमाद्विवचने सम्पृक्तौ इति रूपम्।
- वागर्थप्रतिपळाये - वागर्थयोः प्रतिपत्तिः वागर्थप्रतिपत्ति इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्यै वागर्थप्रतिपत्तये। एतत् चतुर्थ्येकवचनस्य रूपम्।
- पितरौ - माता च पिता च पितरौ इति एकशेषः।
- पार्वतीपरमेश्वरौ - परमः च असौ ईश्वरः च इति परमेश्वर इति कर्मधारायसमासः। पार्वती च परमेश्वरः च पार्वतीपरमेश्वरौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः।
- अव्ययपरिचय - अत्र इव इति अव्ययपदम् अस्ति। एतत् च सादृश्यवाचकम् अव्ययं वर्तते।
- प्रयोगपरिवर्तनम्- (मया) वागथौं इव सम्पृक्तौ जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ वाबर्थप्रतिपत्तये वन्द्येते।

अलंकारालोचना

उपमा एक अलंकार हैं। उपमालंकार के प्रयोग में चार विषय आवश्यक हैं - उपमेय, उपमान,

टिप्पणी

उपमावाचक एवं सदृश धर्म (साधारण धर्म) प्रस्तुत श्लोक में पार्वती परमेश्वर उपमेय हैं, वागर्थौ उपमान है, उपमानवाचक शब्द 'इव' है जैसे वागर्थौ संयुक्त होता है वैसे ही पार्वती परमेश्वरो भी संयुक्त है यह दोनों का सादृश्य धर्म है अतः यहां उपमालंकार हैं।

पाठगतप्रश्न-4.1

1. कवि किस लिए पार्वती परमेश्वर की वन्दना करते हैं।?
2. पार्वती-परमेश्वर किस के समान संयुक्त हैं।?
3. पितरौ इस शब्द का विग्रह एवं समास का नाम लिखो?
4. प्रस्तुत श्लोक में कौन सा अलंकार हैं।?
5. इनमें से कालिदास रचित नहीं हैं।?

   (क) कुमारसंभव (ख) उत्तररामचरित (ग) मालविकाग्निमित्र (घ) ऋतुसंहार
6. इस श्लोक मे कौन सा अलंकार हैं। ?

   (क) उत्प्रेक्षालंकार (ख) रुपकालंकार (ग) उपमालंकार (घ) दृष्टान्तालंकार
7. उपमालंकार में क्या आवश्यक नहीं?

   (क) उपमेय (ख) उपमान (ग) उपमेय विशेषणम् (घ) सादृशधर्म
8. रघुवंश में कितने सर्ग हैं।?

   (क) 19 (ख) 18 (ग) 20 (घ) 17
9. 'वागर्थौ यहां कौन सा समास हैं।?

   (क) तत्पुरुष (ख) अव्ययीभाव (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व
10. रघुवंश का अन्तिम राजा कौन हैं।?

    (क) अग्निवर्ण (ख) अग्निवर्मा (ग) अग्निशर्मा (घ) अग्निवर्मणः

4.3 मूलपाठ की व्याख्या

क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥2॥

अन्वय- सूर्यप्रभवः वंश क्व। अल्पविषया मतिश्च क्व। मोहाद् दुस्तरं सागरम् उड्डुपेन तितीर्षुः अस्मि।

अन्वयार्थ- सूर्यप्रभवः भास्करोत्पन्नः वंशः कुलं क्व कुत्र अल्पविषया अल्पज्ञानवती मतिश्च बुद्धिश्च क्व कुत्र मोहाद् लोभाद् दुस्तरं तरीतुम् अशक्यं सागरं समुद्रं तितीर्षुः तरीतुम् इच्छुः अस्मि भवामि।

सरलार्थ- महान् सूर्य कुल कहां और मेरी अल्पज्ञान वाली बुद्धि कहां। अर्थात् क्षुद्रमति युक्त मेरे द्वारा सूर्यकुल का वर्णन नहीं किया जा सकता हैं। फिर भी वह करने के लिए उद्यत मैं लघु नौका से भीषण समुद्र को पार करने की इच्छा करता हूँ।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में कवि रघुवंश काव्य रचना में स्वयं का असामर्थ्य कहकर विनय को प्रकट करता हैं। लघु नौका से सुविशाल भयंकर समुद्र को पार करना असंभव होता हैं। कवि कहता है, क्योंकि उसके द्वारा रघुवंश रचना करना भी उसी प्रकार दुष्कर हैं। मनु, दिलीप, रघु आदि महान् राजा थे। अत: उनका चरित्र का वर्णन सामान्य मानव करने के लिए समर्थ नहीं हैं। उनका चरित्र वर्णन करने के लिए बुद्धिमान ही समर्थ हैं। किन्तु कालिदास अपने आप को बुद्धिमान नहीं मानते। अत: वह रघुवंश काव्य के निर्माण में असमर्थ है। लोक में जो शिष्ट होते हैं। वे सर्वप्रथम कार्य में उनका असामर्थ्य ही प्रकट करते हैं। उसके बाद उस कार्य को सम्पादित करते हैं। महाकवि कालिदास भी रघुवंश महाकाव्य की रचना के पूर्व वैसा की आचरण किया। अत: वे भी शिष्ट हैं।

व्याकरण विमर्श

- सूर्यप्रभव: - प्रभवति अस्मात् इति प्रभव: उत्पक्षिस्थानम्। सूर्य: प्रभव: यस्य स: सूर्यप्रभव: इति बहुव्रीहिसमास:।
- अल्पविषया - अल्प: विषय: यस्या: सा अल्पविषया बहुव्रीहिसमास:। एष: शब्द: मतिशब्दस्य विशेषणम्। अत: स्त्रीलिंगेवर्तते।
- तितीर्षु: - तरीतुम् इच्छु: इत्यर्थे तृधातो: सन्प्रत्यये उप्रत्यये च तितीर्षु: इति रूपम्।
- दुस्तरम् - दु:खेन तरीतुं शक्यमिति दुष्करम्।

सन्धिकार्यम्

- सूर्यप्रभवो वंश: - सूर्यप्रभव:+वंश: - विसर्ग सन्धि
- चाल्पविषया - च+अल्पविषया - दीर्घसन्धि
- तितीर्षुर्दुस्तरम् - तितीर्षु:+दुस्तरम् - विसर्गसन्धि
- मोहादुडुपेनास्मि - मोहाद्+उडुपेन+अस्मि - दीर्घसन्धि
- अव्ययपरिचय: - क्व इति ,कम् अव्ययपदम्। कुत्र इति तस्य अर्थ:।
- प्रयोगपरिवर्तनम् - सूर्यप्रभवेन वंशेन क्व (भूयते) अल्पविषया मत्या च क्व (भूयते)। (मया) मोहात् दुस्तरं सागरं उडुपेन तितीर्षुणा (भूयते)।

अलंकारालोचना

यहां सूर्यवंश दुस्तर समुद्र के समान स्वमति लघु नौका के समान इन दोनों में उपमा अलंकार का प्रयोग किया हैं। अत: सूर्यवंश, और स्वमति उपमेयवाचक दो पद हैं। दुस्तर समुद्र और लघु नौका ये दो उपमान वाचक पद है। जैसे लघु नौका से दुस्तर समुद्र को पार करना

टिप्पणी

असंभव है, वैसे की कवि की मति के द्वारा रघुवंश के राजाओं का चरित्रवर्णन करना यह सादृश्य है अतः उपमालंकार है।

पाठगत प्रश्न 4.2

11. कवि ने स्वमति की उपमा किस के साथ की है, रघु राजाओं के चरित्र की उपमा कवि ने किस को दी है?

12. 'मोहादुडुपेनास्मि' का सन्धि विच्छेद कीजिए।

13. तितीर्षुः इसका क्या अर्थ है?

14. प्रस्तुत श्लोक में उपमालंकार सिद्ध कीजिए।

15. प्रभवः नाम किसका है?

(क) विनाश स्थान (ख) प्राप्ति स्थान (ग) उत्पति स्थान (घ) प्रथम स्थान

4.4 मूलपाठ की व्याख्या

मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः॥3॥

अन्वय- मन्दः कवियशः प्रार्थी (अहम्) प्रांशुलभ्ये फले लोभात् उद्बाहुः वामनः इव उपहास्यतां गमिष्यामि।

अन्वार्थ- मन्दः मूढः कवियशःप्रार्थी कविकीर्त्यभिलाषी प्रांशुलाभ्ये उन्नतेन प्राप्ये फले फलविषये लोभात् मोहात् उद्बाहुः उन्नतभुजः वामनः इव खर्व इव उपहास्यतां गमिष्यामि उपहास्यो भविष्यामि।

सरलार्थ- मैं मन्द भी महाकवि यश को प्राप्त करने की इच्छा करता हूँ। अतः उन्नत व्यक्ति से फल प्राप्त करने में लगे हुए बौना पुरुष जैसे उपहास का पात्र होता है उसी प्रकार मैं भी उपहास का पात्र हो जाऊँगा।

तात्पर्यार्थ- महाकवि कालिदास ने पूर्व श्लोक में अपना असामर्थ्य प्रकट किया, किन्तु उससे उसकी तृप्ति नहीं हुई। अतः इस श्लोक में पुनः अपने असामर्थ्य को प्रकाशित कर विनय प्रकट करते हैं। ऊपर स्थित जो कुछ भी वस्तु को उन्नत (लम्बे) व्यक्ति ही प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। कोई बौना उस फल को प्राप्त करने की इच्छा करता है तो उसके द्वारा अपने दोनों भुजा, ऊपर करके प्राप्त किया जा सकता है किन्तु ऐसा करने से वह सभी के द्वारा उपहास का पात्र होता है। कालिदास भी महाकवि की कीर्ति को प्राप्त करने की आकांक्षा करते हैं। किन्तु वह कीर्ति सामान्य मानव प्राप्त करने में समर्थ नहीं होते है। विशिष्ट बुद्धि वाले ही उसे प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी कालिदास उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

वे कहते है कि उनका महाकवित्व इच्छा सामर्थ्य से उत्पन्न नहीं हुआ अपितु लोभ से उत्पन्न हुआ। लोभ के कारण प्रवृत हुए वे सभी के द्वारा उपहासित ही होंगे। लोक में जो महात्मा होते हैं। वे अपने असामर्थ्य के कहने पर लज्जित नहीं होते, महात्माओं का यह लक्षण कालिदास में भी हैं। वस्तुत इस श्लोक द्वारा कालिदास का विनय ही प्रकट होता हैं।

व्याकरण विमर्श

- **कवियश:प्रार्थी**- कवे: यश: कवियश: इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। कवियश: प्रार्थयते इति अर्थे णिनिप्रत्यये कवियश:प्रार्थी इति रूपम्।
- प्रांशुलभ्ये- प्रांशुना लभ्यं प्रांशुलभ्यमिति तृतीयातत्पुरुषसमास:, तस्मिन् प्रांशुलभ्ये। एतत् रूपं सप्तम्येकवचने भवति।
- उद्बाहु:- उन्नत: बाहु: यस्य स उद्बाहु: इति बहुव्रीहिसमास:।
- उपहास्यताम् - उपहसितुं योग्य इत्यर्थे उपपूर्वकात् हस्धतो: ण्यत्प्रत्यये उपहास्य इति रूपम्। उपहास्यस्य भव इत्यर्थे उपहास्यशब्दात् तल्प्रत्यये उपहास्यता, ताम् उपहास्यताम्। एतत् रूपं द्वितीयैकवचने भवति।

सन्धिकार्यम्

- गमिष्याम्युपहास्यताम् - गमिष्यामि+उपहास्यताम्।
- लोभादुद्बाहुरिव - लोभात्+उद्बाहु:+इव।

प्रयोगपरिवर्तनम्

मन्देन कवियश: प्रार्थिना (मया) प्रांशुलभ्ये फले लोभात् उद्बाहुना वामनेन इव उपहास्यता गमिष्यते।

अलंकारयोजना

यहाँ कवि को यश लभ्य व्यक्ति द्वारा लभ्य फल के समान है कवि उस फल की प्राप्ति के लिए इच्छुक बौने पुरुष के समान है। कवि स्वयं यहां उपमेय है। दोनो में उपमा वाचक शब्द हैं। अत: यहाँ उपमा अलंकार हैं।

पाठगत प्रश्न-4.3

16. कवि ने अपने को किस के समान उपमा दी?
17. ऊपर स्थित फल को कौन प्राप्त कर सकता है?
18. इव अव्यय पद का क्या अर्थ है?

19. प्रांशुलभ्य इस पद का विग्रह एवं समास लिखें?

20. ऊपर स्थित वस्तु को कौन प्राप्त नहीं कर सकता?

(क) पीन (ख) वामन (ग) उन्नत (घ) कृश

4.5 मूलपाठ की व्याख्या

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन्पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।।4।।

अन्वय - अथवा पूर्वसूरिभिः कृतवाग्द्वारे अस्मिन् वंशे वज्रसमुत्कीर्णे मणौ सूत्रस्य इव मे गतिः अस्ति।

अन्वयार्थ- अथवा अन्यस्मिन् पक्षे पूर्वसूरिभिः प्राचीनकविभिः कृतवाग्द्वारे कृतकाव्यप्रवेशद्वारे अस्मिन् अत्र वशे कुले वज्रसमुत्कीर्णे वज्रविद्धे मणौ रत्ने सूत्रस्य इव तन्तोः इव मे मम गतिः सञ्चारः अस्ति वर्तते।

सरलार्थ- वाल्मीकि आदि प्राचीन कवियों ने काव्य के माध्यम से इस वंश मे प्रवेश किया। जैसे वज्रविद्ध रत्न मे सूर्य की गति बाधा रहित होती है उसी प्रकार रघुवंश में मेरा प्रवेश निर्बाध है।

तात्पर्यार्थ- पूर्व में कहकर महाकवि कालिदास ने रघुवंश काव्य के लेखन में अपना सामर्थ्य प्रकट किया। इस श्लोक में वर्णन किया है, कि असामर्थ्य के होने पर भी कवि काव्य लेखन में कैसे प्रवृत हुआ। कवि कहता कि उसके लिए रघुवंश काव्य की रचना करना सरल ही हैं। क्योंकि वह रघुवंश का वर्णन करने वाला प्रथम व्यक्ति नहीं है। पूर्व में वाल्मीकि आदि महान कवियों ने भी रामायण आदि ग्रन्थों की रचना की हैं। वहाँ रघुवंश के राजाओं का जीवन सम्यक् रूप से वर्णित किया है। इस कारण कवि का कार्य सुकर ही है। इस समर्थन में कवि दृष्टान्त भी देता है कि वज्र या मणिबेधक सूची से मणि में छेद किया जाता हैं। जैसे रघुवंश काव्य रचना में कवियों की गति निर्बाध होती हैं। क्योंकि वाल्मीकि आदि विद्वानों में अपने काव्य द्वारा उसमें प्रवेश द्वार का निर्माण कर दिया। उसी प्रकार रघुवंश काव्य के निर्माण में कवि अपनी प्रतिमा को बाध रहित करता है, और व्यास वाल्मीकि आदि प्राचीन कवियों में अपनी श्रद्धा को प्रकट करते हैं।

व्याकरण विमर्श

- पूर्वसूरिभिः - पूर्वं च ते सूरयः पूर्वसूरयः, तैः इति कर्मधरायसमासः।
- कृतवाग्द्वारे - कृतं वाक् एव द्वारं यस्य सः कृतवाग्द्वारः, तस्मिन् इति बहुव्रीहिसमासः।
- वज्रसमुत्कीर्णे- वज्रेण समुत्कीर्णः वज्रसुत्कीर्णः इति तृतीयातत्पुरुषसमासः। वज्रं नाम मणिभेदकः सूचीविशेषः।

सन्धिकार्यम्

- वंशेऽस्मिन् - वंशे + अस्मिन्।
- सूत्रस्येवास्ति - सूत्रस्य+इव+अस्ति
- अव्ययपरिचयः - अथवा इति विकल्पार्थकम् एकम् अव्ययम्।
- प्रयोगपरिवर्तनम् - अथवा पूर्वसूरिभिः कृतवाग्द्वारे अस्मिन् वंशे वज्रसमुत्कीर्णे मणौ सूत्रस्य इव मे गत्या भूयते।

अलंकारालोचना

रस श्लोक में पूर्व कवियों द्वारा किये गये काव्य द्वारा रघु वंश की वज्रसमुत्कीर्ण मणि से उपमा की हैं। कवि की गति की समानता सूई की गति से वर्णित हैं। इव उपमावाचक शब्द भी हैं। अतः यहां उपमा अलंकार हैं।

पाठगत प्रश्न-4.4

21. वज्रबिद्ध रत्न में सूई की गति कैसी होती है?

22. वज्र किसका नाम है?

23. ''सूत्रस्येवाहित'' इस सन्धि विच्छेद कीजिए।

24. पूर्वसूरी कौन हैं?

25. इस श्लोक में उपमान वाचक शब्द क्या है?

(क) इव (ख) वश (ग) मणि (घ) अन्य।

4.6 मूलपाठ की व्याख्या

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्॥5॥

अन्वय- सः अहम् आजन्मशुद्धानाम् आफलोदयकर्मणाम् आसमुद्रक्षितीशानाम् आनाकरथवर्त्मनाम् (रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये)

अन्वयार्थ- सः तादृशः अहं कालिदासः आजन्मशुद्धानां जन्मतः पवित्राणाम् आफलोदयकर्मणां फलप्राप्तिपर्यन्तं कर्म कुर्वाणानाम् आसमुद्रक्षितीशानां समुद्रपर्यन्तं पृथ्वीपालकानाम् आनाकथवर्त्मनां स्वर्गपर्यन्तं रथमार्गः अस्ति येषां रघूणां रघुवंशोत्पन्नानां राज्ञाम् अन्वयं वशं वक्ष्ये कथयिष्यामि।

सरलार्थ- जन्म से पवित्र, फललाभपर्यन्त कर्म करने वाले, सार्वभौम इन्द्र के सहचारी रघुवंश

टिप्पणी

के राजाओं के वंश का महाकवि कालिदास वर्णन करते हैं।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक से चार श्लोकों तक कवि द्वारा रघुवंश के राजाओं के चरित्र का वर्णन किया गया है। नौवें श्लोक से इन श्लोकों का अन्वय है। यहां रघुवंश के राजाओं को विशेषण चतुष्ट्य दिया गया हैं। प्रथम विशेषण है सोहमाजन्मशुद्धानाम् यर्थात् रघुवंशीय राजा जन्म से ही शुद्ध पवित्र थे। द्वितीय आफलोदयकर्मणाम् अर्थात् वे फल प्राप्ति पर्यन्त कर्म में आचरण करते थे। कार्य के सम्पादन काल में विघ्न आने पर भी कर्म का त्याग नहीं करते थे। अर्थात वे निरन्तर कर्म सम्पादित करते थे। तृतीय आसमुद्रक्षीतीशानाम् अर्थात् उनका राज्य समुद्रपर्यन्त था। उनके राज्य की सीमा समुद्र थी। अत: पृथ्वी पर अन्य किसी राजा का राज्य नहीं था। समुद्र तक भूमि के ये ही राजा महापति थे। अन्तिम विशेषण आनाकरथवर्त्मनाम् अर्थात् स्वर्गपर्यन्त इनका रथ मार्ग था। स्वर्ग के प्रति भी उनका आगमन-गमन था। ये इन्द्र के मित्र थे। इस प्रकार के महान् रघुवंश के राजाओं का चरित का वर्णन करने के लिए कालिदास प्रवृत हुए।

व्याकरण विमर्श

- **आजन्मशुद्धानाम्** - जन्मन आ इति आजन्म इति अव्ययीभावसमास:। आजन्म शुद्धा: आजन्मशुद्धा: इति सुप्सुपासमास:, तेषाम् आजन्मशुद्धानाम्। एतत् रूपं षष्ठीबहुवचने भवति।
- **आफलोदयकर्मणाम्** - फलादयात् आ इति आफलोदयम् इति अव्ययीभावसमास:। आफलोदयं कर्म येषां ते आफलोदयकर्माण: इति बहुव्रीहिसमास:, तेषाम् आफलोदयकर्मणाम्। एतत् रूपं षष्ठीबहुवचने भवति।
- **आसमुद्रक्षितीशानाम्** - समुद्रात् आ इति आसमुद्रम् इति अव्ययीभवसमास:। क्षिते: ईशा: क्षितीशा: इति तत्पुरुषसमास:। आसमुद्रक्षितीशा: इति सुप्सुपासमास:, तेषां आसमुद्रक्षितीशानाम् एतत् रूपं षष्ठीबहुवचने भवति। क्षिति: नाम पृथिवि।
- **आनाकरथवर्त्मनाम्** - नाकात् आ आनाकम् इति अव्ययीभावसमास:। रथस्य वर्त्म रथवर्त्म इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। आनाकं रथवर्त्म येषां ते आनाकरथवर्त्मान: इति बहुव्रीहिसमास:, तेषांम् आनाकरथवर्त्मनाम्। ,तत् रूपं षष्ठीबहुवचने भवति।

सन्धिकार्यम्

- सोहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्- स:+अहम्+आजन्मशुद्धानाम्+आफलोदयकर्मणाम्।
- आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् - आसमुद्रक्षितीशानाम्+आनाकरथवर्त्मनाम्।
- प्रयोगपरिवर्तनम्-तेन मया आजन्मशुद्धानाम् आफलोदयकर्मणाम् आसमुद्रक्षितीशानाम् आनाकरथवर्त्मनाम् (रघूणाम् अन्वय: वक्ष्यते)।

पाठगत प्रश्न-4.5

26. आनाकरथवर्त्मनाम् इसका अर्थ एवं समासादि स्पष्ट कीजिए।

27. रघुवंश के राजाओं की सीमा कहां तक थी?

28. सोखहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् इसका सन्धि विच्छेद कीजिए।

29. रघुवंशीय राजाओं के मार्ग कहां तक थे।

(क) स्वर्गपर्यन्त (ख) गमनपर्यन्त (ग) पातालपर्यन्त (घ) राज्यसीमापर्यन्त।

30. क्षिति किसका नाम हैं।

(क) जलम् (ख) पृथिवी (ग) वायु (घ) आकाश।

4.7 मूलपाठ की व्याख्या

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्॥6॥

अन्वय- (सः अहम्) यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनां यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् (रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये)।

अन्वयार्थ- सः अहम् कालिदासः यथाविधिहुताग्नीनां विधपूर्वकं होमं कुर्वतां यथाकामार्चितार्थिनां यथाभिलाषं याचकानां सत्कारं कुर्वतां यथापराधदण्डानां अपराधनुसारेण दण्डं प्रदातृणाम् यथाकालप्रबोधिनां यथासमयं प्रबोधनशीलानां रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये।

सरलार्थ- मैं कालिदास विधि पूर्वक यज्ञों से अग्नि को तृप्त करने वाले, याचकों को मनोनुकूल दान देने वाले, अपराध के अनुसार दण्ड देने वाले, उचित समय पर जागरुक रघुवंशीय राजाओं के वंश का वर्णन करुंगा।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में कालिदास रघुवंशीय राजाओं के गुण विशेष का वर्णन करते हैं। रघुवंशीय राजा सभी कार्यों को यथार्थ सम्पादित करते थे। इसको प्रदर्शित करने के लिए उनके विशेषण चतुष्टय का यहां उल्लेख करते हैं। यथाविधिहुताग्नीनाम् अर्थात् वेदाशास्त्रों में अग्नि होम आदि का विधान है वैसा ही पालन करते थे। अग्नि दो प्रकार की होती है। श्रौताग्नि और स्मार्ताग्नि। स्मार्ताग्नि के तीन भेद होते हैं- दक्षिणाग्नि, आहवनीयाग्नि और गार्हपत्याग्नि। स्मार्ताग्नि के दो भेद है- शम्याग्नि और आवसथ्याग्नि। ये राजा लोग इन सभी अग्नियों का हवन यथाविधि करते थे। शास्त्रानुसार यज्ञ का आचरण करते थे अतः फलितार्थ भी सम्यक् रूप से होता था। यथाकामार्चितार्थिनाम् अर्थात् याचक जो जो इच्छा करते थे वह सब कुछ उन याचकों को देते थे। अभिलाषा के अनुसार याचको के लिए इष्ट वस्तुएं, प्रदान करके उनको सन्तुष्ट करते थे। यह उनकी दानविषय का वर्णन है। यथापराधदण्डानाम् अर्थात जो अपराध किया उस अपराध के अनुसार अपराधी को दण्ड देते थे। उनके शासक काल में अपराध

टिप्पणी

करके कोई भी दण्डरहित नहीं रहता था। उनके द्वारा अधिक दण्ड वाले को न्यून दण्ड या न्यून दण्डवाले को अधिक दण्ड का विषम भाव नहीं होता था। यथाकाल प्रबोधिनाम्अर्थात् वे जिस समय जो कार्य करना चाहिए उसी उचित समय में उस कार्य को करने के लिए प्रबुद्ध होते थे। जैसे युद्ध करना चाहिए यह लक्षित होने परवे युद्ध के लिए प्रस्तुत होते थे। कहीं जाना चाहिए ऐसा लक्षित होने पर वे जाने के लिए प्रस्तुत होते थे। इस प्रकार उनके कार्य के लिए कालिक बुद्धि अवतरित होती थी। तादृश रघुवंशीय राजाओं का वर्णन करने का प्रयत्न किया हैं।

व्याकरण विमर्श

- **यथाविधिहुताग्नीनाम्**- हुता अग्नयो यैः ते हुताग्नयः इति बहुव्रीहिसमासः। यथाविधि हुताग्नयः यथाविधिहुताग्नयः इति सुप्सुपासमासः, तेषां यथाविधिहुताग्नीनाम्। एतत् रूपं गाष्ठीबहुवचने भवति।
- **यथाकामार्चितार्थिनाम्**- कामम् अनतिक्रम्य यथाकामम् इति अव्ययीभावसमासः। अर्चिताः अर्थिनः यैस्ते अर्चितार्थिनः इति बहुवीहिः। यथाकामम् अर्चितार्थिनः यथाकामार्चितार्थिनः इति सुप्सुपासमासः, तेषां यथाकामार्चितार्थिनाम्। षष्ठीबहुवचने एतत् रूपं भवति।
- **यथापराधदण्डानाम्**- अपराधम् अनतिक्रम्य यथापराधम् इति अव्ययीभावसमासः। यथापराध दण्डः येषां ते यथापराधदण्डाः इति बहुव्रीहिसमासः, तेषां यथापराधदण्डानाम्। षष्ठीबहुवचनान्तम् एतत् रूपम्।
- **यथाकालप्रबोधिनाम्**- कालम् अनतिक्रम्य यथाकालम् इति अव्ययीभावसमासः। यथाकालं प्रबोधिनः यथाकालप्रबोधिनः इति सुप्सुपासमासः, तेषां यथाकालप्रबोधिनाम्। षष्ठीबहुवचने भवति एतत् रूपम्।
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**- (तेन मया) यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनां यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम् (रघूणाम् अन्वयः वक्ष्यते)।

पाठगत प्रश्न-4.6

31. अग्नि के भेद उपभेद को लिखें।
32. यथापराधदण्डानाम् का समास करके अर्थ लिखिए।
33. श्लोक में कहे गये चार विशेषण किसकी विशेषता बताते हैं?
34. अग्नि के कितने भेद हैं?

    (क) 5 (ख) 4 (ग) 3 (घ) 2
35. इनमें से कौनसी श्रौताग्नि नहीं हैं?

टिप्पणी

(क) दक्षिणाग्नि (ख) आवसधयाग्नि (ग) गार्हयपत्याग्नि (घ) आहवनीयाग्नि

36. इस श्लोक में रघुवंशी राजाओं के कितने विशेषण दिये हैं?

(क) तीन (ख) चार (ग) पांच (घ) छह

4.8 मूलपाठ की व्याख्या

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्॥7॥

अन्वय- (सः अहम्) त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणां यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनां (रघूणामन्वयं वक्ष्ये)।

अन्वयार्थ- सः अहं कविः त्यागाय दानाय सम्भृतार्थानां धनस्य संग्रहकाणां सत्याय सत्यरक्षायै मितभाषिणाम् अल्पभाषणशीालानां यशसे कीर्तये विजिगीषूणां विजयम् इच्छतां प्रजायै सन्तानाय गृहमेधिनां गृहस्थाश्रमं प्रविशतां रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये।

सरलार्थ- रघुवंश में उत्पन्न राजा दान के लिए धन का संग्रह करते थे, सत्य के लिए कम बोलते थे कीर्ति के लिए दिग्विजय करते थे और सन्तान प्राप्ति के लिए विवाह करते थे।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में कवि कहते हैं कि वे राजा दानादि के लिए धन का अर्जन करते थे। परन्तु वे कदापि स्वार्थ सिद्धि के लिए धनसंग्रह नहीं करते थे, वे सम्पत्तियों का सम्यक् उपयोग करते थे। जिसमें उनका अभ्युदय होता था। वे सत्य के लिए अल्प भाषण करते थे। वस्तुत व्यर्थ ही बहुभाषण सुशोभित नहीं होता। सत्य कथन के लिए जितनी भाषा की अपेक्षा होती है उतनी वाणी उपयुक्त होती है, जो अधिक बोलते है, उनकी वाणी मिथ्या होती है। अतः रघुवंशीय राजा स्वल्प भाषण करते थे। वे यश प्राप्ति के लिए दिग्विजय करते थे। सामान्यतया राजा धनादि योग के लिए राज्यों को जीतते हैं। परन्तु वे यश की प्राप्ति के लिए राज्यों को जीतते थे। और सन्तान प्राप्ति के लिए ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। अज्ञानी लोग भार्यादि के भोग के लिए विवाह करते हैं। किन्तु रघुवंश के राजाओं का सन्तान प्राप्ति ही विवाह का कारण था। इस प्रकार रघुवंश के राजाओं को चरित्र का वर्णन करने के लिए कवि कालिदास प्रवृत हुए।

व्याकरण विमर्श

- **सम्भृतार्थानाम्**- सम्भृतः सञ्चितः अर्थः यैः ते सम्भृतार्थाः इति बहुव्रीहिसमासः, तेषां सम्भृतार्थानाम्। षष्ठीबहुवचने एतत् रूपम् अस्ति।
- **मितभाषिणाम्**- मितं स्वल्पं भाषणं शीलं येषां ते मितभाषिणः तेषां मितभाषिणाम्। षष्ठीबहुवचने एतत् रूपम् अस्ति।
- **विजिगीषूणाम्**- विजेतुम् इच्छवः विजिगीषवः तेषां विजिगीषूणाम्। अत्र जिधतोः सन्प्रत्ययः उप्रत्ययः च विहितः।

टिप्पणी

- **गृहमेधिनाम्**- गृहै: दौर: मेधन्ते संगमं कुर्वन्ति इति ग्रहमेधिन:, तेषां गृहमेधिनाम्। एतत् रूपं षष्ठीबहुवचनान्तम्।

प्रयोगपरिवर्तनम्

(तेन मया) त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणां यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनां (रघूणाम् अन्वय: वक्ष्यते)।

पाठगत प्रश्न-4.7

37. रघुवंशीय राजा किसलिए कम बोलते थे?

38. मितभाषिण: का विग्रह क्या है?

39. ''प्रजायै गृहमेधिनाम्'' इस कथन से कवि क्या प्रकट करना चाहते हैं?

40. विजिगीषूणाम् में कौन सा प्रत्यय है?

    (क) सन्प्रत्यय (ख) यङ्-प्रत्यय (ग) सुप्रत्यय (घ) यक्प्रत्यय

41. रघुवंशीय राजा किसलिए विवाह करते थे।

    (क) कामभोगाय (ख) संसारपालनाथ (ग) सन्तानप्राप्तये (घ) पित्रादेशपालनाय

4.9 मूलपाठ की व्याख्या

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवनै विषयैषिणाम्
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥8॥

अन्वय- (स: अहम्) शैशवे अभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणां वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम् अन्ते योगेन तनुत्यजाम् (रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये)।

अन्वयार्थ- स: अहं कालिदास: शैशवे बाल्ये अभ्यस्तविद्यानाम् अधीतशास्त्राणां यौवने तारूण्ये विषयैषिणां भोगस्य इच्छुकानां वार्द्धके वृद्धत्वे मुनिवृत्तीनां वानप्रस्थाश्रमिणां तथा च अन्ते शरीरत्यागसमये योगेन परमात्मन: ध्यानेन तनुत्यजाम् शरीरत्यागिनां रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये।

सरलार्थ- रघुवंशीय राजा बाल्याकाल में विद्या का अभ्यास करते थे। यौवनकाल में विषयों के सुख का अनुभव करते थे, वार्धक काल में मुनि जीवन के मार्ग को स्वीकार करते थे, और जीवन के अन्त में योगमार्ग से देहत्याग कर देते थे।

तात्पर्यार्थ- कवि ने इस श्लोक में रघुवंशीय राजाओं के पुरुषार्थमय सम्पूर्ण जीवन का वर्णन किया है वे राजा अपने जीवन में चारों आश्रमों का उचित प्रकार से पालन करते हैं। शिशुकाल में वे सम्यक् रूप से विद्या का अभ्यास करते थे। विद्यार्जन ही ब्रह्मचर्याश्रम का मूल हैं। अत:

ब्रह्मचर्याश्रम का वे साधुरूप में परिपालन करते थे। उसके बाद उनका यौवनकाल आता था। उस समय में ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करके वे विषयों का सुख प्राप्त करते थे। धर्म, अर्थ, और काम ये तीन त्रिवर्ग कहे जाते हैं। राजा लोग इन दोनों आश्रमों में इन तीनों वर्गो (त्रिवर्ग) की साधना करते थे। तदनन्तर वृद्धावस्था में मुनि जैसा जीवन व्यतीत करते वैसा ही ये राजा व्यतीत करते थे। इस प्रकार इनके द्वारा वानप्रस्थाश्रम एवं संन्यासाश्रम को सम्यक् रुप से पालन किया जाता था। जीवन के अन्तिम समय में वे योग के मार्ग से देह का त्याग करते थे। अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करते थे। इस प्रकार सभी आश्रमों की सार्थकता थी, और उनके द्वारा जीवन के पुरुषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) को प्राप्त करते थे। कवि मे इस श्लोक द्वारा सनातन धर्म के सार को दर्शाया हैं।

व्याकरण विमर्श

- अभ्यस्तविद्यानाम्- अभ्यस्ता विद्या यैः ते अभ्यस्तविद्याः इति बहुव्रीहिसमासः, तेषाम् अभ्यस्तविद्यानाम्। षष्ठया बहुवचने एतत् रूपम्।
- विषयैषिणाम्- विषयान् इच्छति इति विषयैषिणः, तेषां विषयैषिणाम्। षष्ठीबहुवचनान्तं रूपमेतत्।
- मुनिवृत्तीनाम्- मुनीनां वृत्ति व्यापारः येषां ते मुनिवृत्तयः इति बहुव्रीहिसमासः, तेषां मुनिवृत्तीनाम्। मुनिवृत्तिशब्दस्य षष्ठीबहुवचने इदं रूपं भवति।
- तनुत्यजाम्- तनुं त्यजन्ति इति तनुत्यजः इति उपपदसमासः, तेषां तनुत्यजाम्। तनुत्यज्-शब्दस्य षष्ठीबहुवचन इदं रूपम्ं तनुं त्यक्तवताम् इत्यर्थः।

सन्धिकार्यम्

- शैशवेभ्यस्तविद्यानाम् - शैशवे+अभ्यस्तविद्यानाम्
- योगेनान्ते- योगेन+अन्ते
- प्रयोगपरिवर्तनम्- (तेन मया) शैशवे अभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणां वार्धके मुनिवृत्तीनाम् अन्ते योगेन तनुत्यजाम् (रघूणाम् अन्वयः वक्ष्यते)।

पाठगत प्रश्न-4.8

42. सूर्यवंशीय राजाओं का देह त्याग कैसे होता था?
43. रघुवंशीय राजा शिशु अवस्था में क्या करते थे?
44. ''तनुत्यजाम्'' इसका विग्रह एवं समास का नाम लिखिए।
45. आश्रम कितने हैं।

    (क) तीन (ख) चार (ग) पांच (घ) छह

टिप्पणी

46. अभ्यस्तविद्यानाम् में कौन सा समास है।

(क) बहुव्रीहिसमास (ख) तत्पुरुष समास (ग) द्वन्द्वसमास (घ) अव्ययीभावसमास

4.10 अब मूलपाठ की व्याख्या

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोक्षपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः॥9॥

अन्वय- (सः अहम्) तनुवाग्विभवः सन् अपि तदगुणैः कर्णम् आगत्य चापलाय प्रचोदितः सन् (रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये)।

अन्वयार्थ- सः अहं कालिदासः तनुवाग्विभवः अल्पवाक्यसम्पत्तिवान् सन् अपि भवन् अपि तद्गुणैः रघुवंशीयानां गुणैः कर्णम् श्रोत्रम् आगत्य प्राप्य चापलाय चाञ्चल्याय प्रचोदितः प्रेरितः सन् रघूणाम् अन्वयं वक्ष्ये।

सरलार्थ- मै कालिदास अल्पज्ञानी हूँ। फिर भी रघुवंश के राजाओं के महान गुणों से प्रेरित होकर रघुवंश काव्य को रचना करने के लिए प्रवृत हूँ।

तात्पर्यार्थ- वाल्मीकि आदि कवियों के द्वारा पूर्व में रघुवंशीय राजाओं का वर्णन किया गया। अतः वह रघुवंश लब्ध प्रवेश है। यह कालिदास ने पूर्व में वर्णित किया है। इससे पूर्व चार श्लोकों में उनका आजन्मशुद्धयाशुद्धि आदि गुणों का भी वर्णन किया है। फिर भी इस श्लोक में पुनः अपने को असामर्थ्यवान कहते हैं। वे कहते है कि रघुवंश के राजाओं का जीवन वर्णन के लिए जितना ज्ञान अपेक्षित है उतना ज्ञान उनका नहीं है। फिर भी कवि नें जब उन राजाओं के गुणों को सुना, तब उन गुणों से प्रेरित हुआ। अर्थात् उनके चरित का वर्णन करने के लिए उनके मन में महती इच्छा उत्पन्न हुई। अतएव इस श्लोक का यह तात्पर्य है कि वह रघुवंश काव्य को रचने के लिए प्रवृत हुए।

व्याकरण विमर्श

- तनुवाग्विभवः- वाचां विभवः वाग्विभवः इति तत्पुरुषसमासः। तनुः वाग्विभवः यस्य सः तनुवाग्विभवः इति बहुव्रीहिसमासः।
- तद्गुणैः- तेषां गुणाः तद्गुणाः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तैः तद्गुणैः। तृतीयायाः बहुवचने एतत् रूपं भवति।
- चापलाय- चपलस्य भावः चापलं, तस्मै चापलाय। चतुर्थ्येकवचनान्तं रूपम्।
- वक्ष्ये- ब्रूधतोः लृटि उत्तमपुरुषैकवचने वक्ष्ये इति रूपम्।
- आगत्य- आपूर्वकात् गम्धतोः ल्यप्प्रत्यये आगत्य इति रूपं भवति। अस्य अव्ययपदवत् प्रयोगः भवती।

सन्धिकार्यम्

- रघूणामन्वयम्- रघूणाम्+अन्वयम्
- तनुवाग्विभवोऽपि- तनुवाग्विभवः+अपि
- कर्णमागत्य- कर्णम्+आगत्य

प्रयोगपरिवर्तनम्

(तने मया) तनुवाग्विभवेन सता अपि तद्गुणैः कर्णम् आगत्य चापलाय प्रचोदितेन (रघूणाम् अन्वयः वक्ष्यते)।

विशेष आलोचना- श्लोक के कुछ विभाग होते हैं। यदि एक ही श्लोक से वाक्य की समाप्ति हो जाती है तो उसे 'मुक्तक' कहते हैं। यदि दो श्लोकों के मध्य परस्पर सम्बन्ध होता हैं। तो उसे 'युग्मक' कहते हैं। यदि तीन श्लोकों के मध्य सम्बन्ध हो तो उसे 'सान्दानतिक' कहते हैं। यदि चार श्लोकों के मध्य सम्बन्ध है तो उसे 'विशेषक' कहते है, और उनसे भी अधिक श्लोकों के मध्य सम्बन्ध है तो उसे 'कुलक' कहते है। यहाँ भी 'सोहमाजन्म' इत्यादि श्लोक से 'रघुणामन्वय वक्ष्ये' श्लोक पर्यन्त पांच श्लोकों के मध्य सम्बन्ध है अन्तः यहाँ 'कुलक' है, इन्हें श्लोक के विभाग कह सकते हैं।

पाठगतप्रश्न-4.9

47. कवि कैसे रघुवंश काव्य लेखन में प्रवृत हुए?
48. 'तनुवाग्विभवः'' का विग्रह एवं समास का नाम लिखिए?
49. यहां कुलक का लक्षण कैसे अन्वित हुआ दर्शायें?
50. चार श्लोकों के परस्पर सम्बन्ध को क्या कहते हैं?

    (क) कुलकम् (ख) सान्दानातिकम् (ग) मुक्तक (घ) विशेषक

51. 'वक्ष्ये' यहां कौनसी धातु हैं।

    (क) वद् (ख) वच् (ग) ब्रू (घ) व्रज्

4.11 मूलपाठ की व्याख्या

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा॥10॥

अन्वय- तं सदसद्व्यक्तिहेतवः सन्तः श्रोतुम् अर्हन्ति, हि हेम्नः विशुद्धः श्यामिका अपि वा अग्नौ संलक्ष्यते।

टिप्पणी

अन्वयार्थ- तं रघुवंशनामकं प्रबन्धं सदसद्व्यक्तिहेतवः गुणदोषविभागकर्तारः सन्तः विद्वांसः श्रोतुम् आकर्णयितुम् अर्हन्ति योग्या भवन्ति हि यतो हि हेम्नः सुवर्णस्य विशुद्धिः निर्दोषरुपं श्यामिकापि वा लोहान्तरसंसर्गात्मकः दोषः अपि वा अग्नौ वह्नौ संलक्ष्यते संदृश्यते।।

सरलार्थ- रघुवंश प्रबन्ध को बुद्धिमान ही सुनने के योग्य हैं। क्योंकि वे ही काव्य के गुण और दोष को सम्यक् रुप से समझते हैं। सोने की शुद्धि एवं दोष अग्नि मे ही परिलक्षित होते हैं।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में कालिदास ने रघुवंश काव्य के अधिकारी के विषय में समालोचना की है। सभी रघुवंश काव्य को पढ़ने के योग्य नहीं है। सम्यक् गुण दोष विवेचक ही इसके अधिकारी है। जो गुण दोषों का विवेचन करना नहीं जानते वे दोष स्थान में गुण ग्रहण और गुणस्थान में दोष ग्रहण करते हैं। जिससे काव्य के यथायुक्त अर्थ को प्राप्त करने में समर्थ नहीं होते। किन्तु विद्वान् गुण और दोषों को सम्यक् रुप में समझकर यथार्थ को ग्रहण करते हैं। यहाँ कवि एक दृष्टान्त भी देते हैं। सोने की विशुद्धि अथवा दोष सामान्यतया नहीं समझ पाते हैं। किन्तु यदि वह सोना अग्नि में स्थापित होता हैं। तब उसके गुण व दोष परिलक्षित होते हैं। जैसे अग्नि निष्पक्ष रुप से सोने के गुण व दोष को प्रकाशित करता है। उसी प्रकार विद्वान् भी काव्य के गुण व दोषों को प्रकट करते हैं। इस श्लोक में कवि अपने काव्य के गुण, दोष परीक्षा प्राज्ञ (विद्वान्) ही कर सकते है, यह कहते है। उससे वे प्राज्ञों (विद्वान्) के द्वारा कहे गये दोषों को ग्रहण करेंगे। इससे कालिदास का एक महागुण सूचित होता है।

व्याकरणविमर्श

- **सदसद्व्यक्तिहेतवः**- सच्च असच्च सदसती इति इतरेतरद्वन्द्वसमासः सदसतोः व्यक्ति सदसद्व्यक्तिः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। सदसद्व्यक्तिः हेतवः सदसद्व्यक्तिहेतवः इति षष्ठीसमासः।
- श्रोतुम् - श्रुधतोः तुमुन्प्रत्यये श्रोतुम् इति रूपम्।
- अर्हन्ति - अर्ह्-धतोः लटि प्रथमपुरुषबहुवचने अर्हन्ति इति रूपम्।
- विशुद्धिः - विपूर्वकात् शुध्-धतोः क्तिन्प्रत्यये विशुद्धिशब्दः निष्पद्यते।
- संलक्ष्यते - सम्-पूर्वकात् लक्ष्-धतोः कर्मणि लटि प्रथमपुरुषैकवचने संलक्ष्यते इति रूपम्।

सन्धिकार्यम्

- श्रोतुमर्हन्ति- श्रोतुम्+अर्हन्ति
- ह्याग्नौ- हि+अग्नौ
- श्यामिकापि - श्यामिका+अपि
- अव्ययपरिचयः- अस्मिन् श्लोके हि, अपि, वा, इति, त्रीणि अव्ययपदानि।

प्रयोगपरिवर्तनम्- सदसद्व्यक्तिहेतुभिः सद्भिः स श्रोतुम् अर्ह्यते। हि हेम्नः विशुद्धिं श्यामिकाम् अपि वा अग्नौ संलक्षयन्ति।

अलंकारालोचना- जैसे अग्नि सोने के गुण दोषों को सम्यक् प्रकाशित करती है। वैसे ही प्राज्ञ (विद्वान्) भी काव्य के गुण व दोष को प्रकाशित करते हैं। यहां विद्वान की अग्नि के साथ उपमिति हैं। उपमान वाचक शब्द 'यथा' हैं। अत: उपमालंकार हैं।

पाठगतप्रश्न-4.10

52. रघुवंश काव्य पढ़ने का अधिकारी कौन है?

53. यहां प्रज्ञा का किसके साथ उपमिति है।

54. सदसदव्यक्तिहेतव: का विग्रह एवं समास का नाम लिखिए।

55. श्लोक में अग्निपद किसका वाचक है।

(क) उपमावाचक (ख) उपमानवाचक (ग) उपमेयवाचक (घ) सादृश्यधर्मवाचक

पाठसार

शिष्ट जन कार्य के निर्विघ्न समाप्ति के लिए मंगल अर्चना करते है। अत: महाकवि कालिदास ने भी काव्य के आदि में मंगलाचरण किया है। यहाँ शब्द और अर्थ का स्पष्ट ज्ञान के लिए वागथौ के समान संयुक्त जगत के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर की वन्दना की है। मंगलविधा के लिए रघुवंश काव्य रचना में अपना असामर्थ्य प्रकट किया है। वह मन्दमति है। अत: जैसे लघु नौका से दुस्तर समुद्र का पार करना असंभव है वैसे ही मन्दमति के द्वारा रघुवंश काव्य रचना दुष्कर होती है। जैसे बौना ऊपर स्थित वस्तु को प्राप्त करने में समर्थ नहीं होता है। वैसे ही कवि भी रघुवंश काव्य की रचना करने में समर्थ नहीं है। किन्तु व्यास वाल्मीकि आदि ने पूर्व में रघुवंश के राजाओं के चरित्र का वर्णन किया। इस कारण यह कार्य कवि के लिए सरल हो गया ऐसा स्वीकार करते हैं। उसके बाद कालिदास ने रघुवंशीय राजाओं का सामान्यतया वर्णन किया। वे जन्म से शुद्ध, फल प्राप्ति पर्यन्त निरन्तर कर्म का सम्पादन करते थे। उनके राज्य की सीमा समुद्र तक थी। वे स्वर्ग के प्रति भी गमन-आगमन करते थे। वे शास्त्रों के अनुसार धर्माचरण करते थे। याचकों के लिए अभीष्ट वस्तु प्रदान करते थे। उनके शासन काल में जो अपराध करता था, वह दण्ड प्राप्त करता था। जब प्रयोजन होता तब वे कार्य के लिए प्रबुद्ध भी थे। वे त्याग के लिए धनसंग्रह, सत्य की रक्षा के लिए मितभाषी, कीर्ति के लिए राज्यों पर विजय, सन्तान के लिए विवाह करते थे। शिशु अवस्था में विद्या का अभ्यास, युवावस्था में विषयों के सुख का अनुभव, वृद्धावस्था में मुनिवत् जीवन यापन करते हैं। जीवन के अन्तिम भाग में योग द्वारा देह त्याग करके मोक्ष प्राप्त करते थे। इस प्रकार उनका जीवन पुरुषार्थ चतुष्ट्य समन्वित था। इस प्रकार ऐसे महाचरित्रों का वर्णन करने में असमर्थ होते हुए भी उनके गुणों से प्रेरित होकर रघुवंश काव्य की रचना की इससे कवि अपनी विनम्रता को भी प्रकट करते है। यह रघुवंश काव्य प्राज्ञ (सदसरव्यक्ति) ही पढने के लिए समर्थ है। क्योंकि वे ही काव्य के दोष व गुण को सम्यक् रुप से ग्रहण करते हैं। जैसे सोने का गुण व दोष अग्नि में ही सम्यक् रुप से परिलक्षित होता हैं।

आपने क्या सीखा

- कालिदास की विनम्रता।
- रघुवंश के राजाओं के विषय में जाना।
- कालिदास की काव्यशैली से परिचित हुए।
- श्लोकों को अन्यय और प्रतिपद अर्थ को जाना।
- उपमादि अलंकारों को जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. रघुवंश के मंगलश्लोक की व्याख्या कीजिए।
2. कालिदास ने अपनी असामर्थ्य को कैसे प्रकट किया?
3. रघुवंशीय राजाओं के पुरूषार्यचतुष्ट्य पूर्ण जीवन का वर्णन कीजिए।
4. उपमालंकार के विषय मे लघु टिप्पणी कीजिए।
5. श्लोक कितने प्रकार के होते है उनके भेद का वर्णन कीजिए।
6. रघुवंशीय राजाओं के कोई चार विशेषणों का वर्णन कीजिए।
7. रघुवंशीय राजा जीवन में चतुर्वर्ग को कैसे साधते थे- विचार कीजिए।
8. तं सन्तः -इस श्लोक मे उपमालंकार को स्पष्ट कीजिए।
9. स्तम्भों में लिखित पदों का परस्पर मेल करो

क्र.सं	स्तम्भ (क)	क्र.सं	स्तम्भ (ख)
1.	पार्वतीपरमेश्वरौ	1.	कालिदासः
2.	रघुवंशम्	2.	शैशवे
3.	उडुपम्	3.	वागर्थौ
4.	आनाकरथवर्त्मानः	4.	वार्धके
5.	वज्रम्	5.	सन्तः
6.	विद्याभ्यासः	6.	लघुनौका
7.	मुनिवृत्तिः	7.	सूचीविशेषः
8.	अधिकारी	8.	रघुवंशीयाःनृपाः

उतरः- 1-3, 2-1, 3-6, 4-8, 5-7, 6-2, 7-4, 8-5

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. कवि वागर्थपतिपत्तये पार्वतीपरमेश्वर की वन्दना करते हैं।
2. पार्वतीपरमेश्वर वागर्थों के समान संयुक्त हैं।
3. माता च पिता च पितरौ इति एकशेष।
4. इस श्लोक मे उपमा अलंकार हैं।
5. (ख)
6. (ग)
7. (ग)
8. (क)
9. (घ)
10. (क)

4.2

11. कवि ने अपनी मति को लघु नौका से उपमित किया और रघुवंश के चरित्र की उपमा कवि ने सागर से की हैं।
12. मोहात् + उडुपेन+ अस्मि
13. तैरने का इच्छुक
14. प्रस्तुत श्लोक में सूर्यवंश दुस्तर समुद्र के समान, अपनी मति को लघु नौका के समान कहा है। अतः सूर्यवंश, स्वमति ये दो उपमेय वाचक पद है। दुस्तर समुद्र और लघुनौका ये दो उपमान वाचक पद हैं। लघुनौका से जैसे दुस्तर समुद्र पार करना असंभव है। वैसे ही कवि की मति से रघुवंशीय चरित वर्णन असंभव है यह सादृश्य है अतः यहाँ उपमा अलंकार है।
15. ग

4.3

16. कवि ने अपने को वामन (बौने) से उपमित किया।
17. ऊपर स्थित वस्तु उन्नत जन से लब्ध है।

18. 'इव' अव्यपद सादृश्य अर्थक हैं।

19. प्रांशुना लभ्यं = प्राशुलभ्यं= तृतीयातत्पुरुष समास, तस्मिन् = प्रांशुलभ्यें

20. ख

4.4

21. वज्रबिद्ध रत्न में सूई की गति निर्बाध होती हैं।

22. वज्र नाम मणिभेदक सूई विशेष का है।

23. सूत्रस्य + इव + अस्ति

24. व्यास वाल्मीकि आदि पूर्व के सूर हैं।

25. क

4.5

26. नाकात् आ आनाकम्- अव्ययीभाव समास, रथस्य वर्त्म रथवर्त्म षष्ठीतत्पुरुषसमास। आनाकं रथवर्त्म येषां ते आनाकरथवर्त्मान :- बहुव्रीहि समास। इसका अर्थ है स्वर्ग पर्यन्त, रघु राजाओं का रथमार्ग था अर्थात् स्वर्ग के प्रति इनका आना जाना रहता था। ये इन्द्र के मित्र थे।

27. रघुवंशीय राजाओं की सीमा समुद्र तक थी।

28. सः+ अहम् + आजन्मशुद्धानाम् + आफलोदयकर्मणाम्

29. क

30. ख

4.6

31. अग्नि दो प्रकार की होती हैं। श्रौताग्नि और स्मार्ताग्नि। श्रौताग्नि के तीन भेद है- दक्षिणाग्नि, आहवनीयाग्नि एवं गार्हपत्याग्नि। स्मार्ताग्नि भी दो प्रकार की हैं।- शम्याग्नि और आवसथ्याग्नि।

32. अपराधम् अंनतिक्रम्य- यथापराधम् - अव्ययीभाव समास। यथापराध दण्डः येषा ते = यथापराधदण्डाः = बहुव्रीहिसमास तेषां यथापराधदण्डानाम्। अर्थ -अपराधः कृतः चेत तदपधनुसारेण अपराधकारिभ्यः ते दण्डान् यच्छति स्म। उसके शासन काल में अपराध करने वाला दण्डरहित नहीं था।

33. चार विशेषण रघुवंशीय राजाओं के चार विशेषण हैं।

34. घ

टिप्पणी

35. ख

36. -2

4.7

37. रघुवंशीय राजा सत्य के लिए मितभाषी थे।

38. मितं स्वल्प भाषणंशीलं येषां ते मितमाषिणः तेषाम् मितभाषिणाम्।

39. रघुवंशीय राजा सन्तान प्राप्ति के लिए ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करते हैं। और सन्तान प्राप्ति के लिए ही विवाह करते थे।

40. क

41. ग

4.8

42. योग से देह को त्यागते थे।

43. शिशु अवस्था में विद्याभ्यास करते थे।

44. तनुं त्यजन्ति इति तनुत्यजः उपपदसमास तेषां तनुत्यजाम्।

45. ख

46. ग

4.9

47. रघुवंश के गुणों से प्रेरित होकर

48. वाचा विभवः =वाग्विभवः तत्पुरुषसमास, तनुः वाग्विभव यस्य सः तनुवाग्विभवः बहुव्रीहि समास

49. चार श्लोकों से अधिक श्लोकों के परस्पर सम्बन्ध को 'कुलक' कहते हैं।

50. घ

51. ग

4.10

52. सन्तः (विद्वान या प्राज्ञ) रघुवंश काव्य पढने के अधिकारी हैं।

53. प्रज्ञा को अग्नि के साथ उपमिति किया हैं।

54. सच्च असच्च सदसती - इतरेतर द्वन्द्व समास। सदसतोः व्यक्तिः सदसद्व्यक्ति :- षष्ठीतत्पुरुष समास। सदसद्व्यक्तिः हेतवः सदसद्व्यक्तिहेतवः = षष्ठीतत्पुरुष समास

55. ख